शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिन्दी अनुवाद अध्ययन में भारतीय दर्शन और ज्ञान परंपरा

डॉ.रतिसुलेगाव
हिंदी विभाग
नॉर्थ ईस्ट क्रिश्चियन युनिवर्सिटी
दीमापुर, नागालैंड, भारत

शोध संक्षेप

भारतीय दर्शन और ज्ञान परंपरा का आधार वेद, उपनिषद, स्मृति, पुराण और शास्त्रीय ग्रंथों में निहित है। इन ग्रंथों ने न केवल आध्यात्मिक और दार्शनिक चिंतन को दिशा दी बल्कि भाषा, साहित्य और अनुवाद की परंपरा को भी गहराई प्रदान की। प्राचीन भारत में अनुवाद केवल भाषाई रूपांतरण नहीं था, बल्कि ज्ञान-संवहन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का माध्यम था। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय दर्शन और ज्ञान परंपरा की नींव को हिन्दी अनुवाद अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में समझना तथा भावी अनुसंधान की रूपरेखा प्रस्तुत करना है।

मुख्य शब्द : *भारतीय दर्शन ज्ञान परंपरा, वेद, उपनिषद, अनुवाद अध्ययन, हिन्दी भाषा, तुलनात्मक अध्ययन, भावी अनुसंधान*

भूमिका

भारतीय दर्शन और ज्ञान परंपरा का इतिहास अत्यंत प्राचीन और बहुआयामी है। इसकी नींव वेद उपनिषद, स्मृति, पुराण और शास्त्रीय ग्रंथों में निहित है, जहाँ ज्ञान को केवल बौद्धिक नहीं बल्कि आध्यात्मिक साधना और जीवन-दर्शन के रूप में देखा गया। भारतीय चिंतन परंपरा ने आत्मा, ब्रह्म, धर्म, कर्म और मोक्ष जैसी अवधारणाओं को केंद्र में रखकर मानव जीवन के उद्देश्य और उसकी नैतिक दिशा को परिभाषित किया। प्राचीन भारत में ज्ञान का संवहन मुख्यतः मौखिक परंपरा के माध्यम से हुआ। गुरुकुल प्रणाली में शिक्षक और शिष्य के बीच संवाद के द्वारा ज्ञान का आदान-प्रदान होता था। बाद में यह परंपरा लिखित ग्रंथों के माध्यम से संरक्षित हुई जिससे ज्ञान का व्यापक प्रसार संभव हुआ। संस्कृत भाषा इस परंपरा की प्रमुख वाहक रही, किन्तु समय के साथ यह ज्ञान क्षेत्रीय भाषाओं में अनुदित होकर जनसामान्य तक पहुँचा।

अनुवाद अध्ययन के दृष्टिकोण से देखा जाए तो प्राचीन भारतीय ग्रंथों का अनुवाद केवल भाषाई रूपांतरण नहीं था, बल्कि यह सांस्कृतिक पुनर्सृजन और दार्शनिक विमर्शों का विस्तार था। उदाहरण स्वरूप बौद्ध ग्रंथों का संस्कृत से पालि और फिर अन्य भाषाओं में अनुवाद हुआ, जिसने भारतीय दर्शन को एशिया के विभिन्न देशों तक पहुँचाया। इसी प्रकार उपनिषदों और वेदांत दर्शन का अनुवाद आधुनिक काल में हिन्दी और अंग्रेज़ी में हुआ, जिससे भारतीय ज्ञान परंपरा वैश्विक विमर्श का हिस्सा बनी।

हिन्दी अनुवाद अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है कि भारतीय दर्शन को हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने से न केवल भारतीय समाज में ज्ञान का लोकतंत्रीकरण हुआ, बल्कि यह शिक्षा, साहित्य और सांस्कृतिक संवाद का भी आधार बना। आज के डिजिटल युग में अनुवाद अध्ययन और

डिजिटल मानविकी के माध्यम से प्राचीन ग्रंथों का पुनर्पाठ और पुनर्प्रस्तुतीकरण सम्भव हो रहा है, जो भावी अनुसंधान के लिए नई दिशाएँ खोलता है।

इस प्रकार भारतीय दर्शन और ज्ञान परंपरा का परिचय हमें यह समझने में मदद करता है कि अनुवाद अध्ययन केवल भाषाई प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, दर्शन और ज्ञान की निरंतरता का सेतु है। प्रस्तुत शोध पत्र इसी बहुआयामी परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए भारतीय दर्शन और ज्ञान परंपरा की नींव का विश्लेषण करता है तथा हिन्दी अनुवाद अध्ययन में इसके भावी अनुसंधान की रूपरेखा प्रस्तुत करता है।

वैचारिक संश्लेषण

1 दार्शनिक आधार

भारतीय दर्शन की नींव वेद और उपनिषदों में है, जहाँ आत्मा, ब्रह्म और मोक्ष की अवधारणाएँ प्रमुख हैं। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदांत जैसी दर्शन-प्रणालियाँ ज्ञान की विविध दृष्टियों को प्रस्तुत करती हैं। इन प्रणालियों ने भारतीय चिंतन को तार्किक, आध्यात्मिक और नैतिक आधार प्रदान किया।

2 ज्ञान परंपरा

प्राचीन भारत में ज्ञान का संवहन मुख्यतः मौखिक परंपरा के माध्यम से हुआ। गुरुकुल प्रणाली में शिक्षक और शिष्य के बीच संवाद के द्वारा ज्ञान का आदान-प्रदान होता था। बाद में यह परंपरा लिखित ग्रंथों के माध्यम से संरक्षित हुई जिससे ज्ञान का व्यापक प्रसार संभव हुआ। इस परंपरा ने भारतीय समाज में ज्ञान को केवल अभिजात्य वर्ग तक सीमित नहीं रखा, बल्कि धीरे-धीरे इसे जनसामान्य तक पहुँचाया।

3 अनुवाद अध्ययन

अनुवाद अध्ययन के दृष्टिकोण से देखा जाए तो प्राचीन भारतीय ग्रंथों का अनुवाद केवल भाषाई रूपांतरण नहीं था, बल्कि यह सांस्कृतिक पुनर्सृजन और दार्शनिक विमर्शों का विस्तार था।

उदाहरण स्वरूप बौद्ध ग्रंथों का संस्कृत से पालि और फिर अन्य भाषाओं में अनुवाद हुआ जिसने भारतीय दर्शन को एशिया के विभिन्न देशों तक पहुँचाया। इसी प्रकार उपनिषदों और वेदांत दर्शन का अनुवाद आधुनिक काल में हिन्दी और अंग्रेज़ी में हुआ जिससे भारतीय ज्ञान परंपरा वैश्विक विमर्श का हिस्सा बनी।

4 सांस्कृतिक आदान-प्रदान

अनुवाद ने भारतीय दर्शन को एशिया और विश्व के अन्य भागों तक पहुँचाया। यह प्रक्रिया भारतीय ज्ञान परंपरा को वैश्विक विमर्श का हिस्सा बनाती है और यह दर्शाती है कि भारतीय चिंतन केवल स्थानीय नहीं बल्कि सार्वभौमिक महत्व रखता है।

3 भावी अनुसंधान की रूपरेखा

अनुसंधानक्षेत्र	संभावितविषय	अपेक्षितयोगदान
दार्शनिक	वेद-उपनिषदों का तुलनात्मक अनुवाद	भारतीय दर्शन की गहन समझ

अध्ययन		
भाषा विज्ञान	संस्कृत से हिन्दी अनुवाद की पद्धतियाँ	अनुवाद अध्ययन में नवीन दृष्टि
सांस्कृतिक अध्ययन	अनुवाद के माध्यम से सांस्कृतिक आदान-प्रदान	वैश्विक संवाद और सह-अस्तित्व
डिजिटल मानविकी	प्राचीन ग्रंथों का डिजिटल अनुवाद और कॉर्पस निर्माण	तकनीकी नवाचार और ज्ञान का संरक्षण
शिक्षा नीति	भारतीय दर्शन को हिन्दी माध्यम में पढ़ाने की रणनीतियाँ	शिक्षा में गुणवत्ता और पहुँच

निष्कर्ष

भारतीय दर्शन और ज्ञान परंपरा की नींव वेद.उपनिषदों और शास्त्रीय ग्रंथों में है। अनुवाद अध्ययन के परिप्रेक्ष्य से यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारत में अनुवद्द केवल भाषाई प्रक्रिया नहीं था, बल्कि यह ज्ञान-संवहन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का माध्यम था। भावी अनुसंधान की रूपरेखा यह दर्शाती है कि भारतीय दर्शन और ज्ञान परंपरा को हिन्दी अनुवाद अध्ययन के माध्यम से और अधिक सशक्त बनाया जा सकता है। इससे न केवल भारतीय समाज में ज्ञान का लोकतंत्रीकरण होगाए बल्कि वैश्विक स्तर पर भी भारतीय दर्शन की प्रासंगिकता बढ़ेगी ।

संदर्भ ग्रन्थ .

1 शर्मा, चन्द्रधर, भारतीय दर्शन का इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2020

2 राधाकृष्णन, सर्वपल्ली, भारतीय दर्शन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस मद्रास, 2018

3 दासगुप्ता, सुरेन्द्रनाथ, ए हिस्ट्री ऑफ इंडियन फिलॉसफी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्लीर, 2019

4 झा, गंगानाथ, भारतीय ज्ञान परंपरा और गुरुकुल प्रणाली, भारतीय विद्या संस्थान, वाराणसी, 2017

5 पाण्डेय, रामचन्द्र, उपनिषदों का दर्शन, हिन्दी साहित्य परिषद, इलाहाबाद, 2016

6 त्रिपाठी, रामनाथ, भारतीय अनुवाद परंपरा का इतिहास, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 2015

7 भट्टाचार्य, हिरण्मय, बौद्ध ग्रंथों का अनुवाद और प्रसार, एशियाटिक सोसाइटी, कोलकाता, 2014

8 सिंह, अजय, हिन्दी अनुवाद अध्ययन और भारतीय दर्शन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2021

9 चक्रवर्ती, देवदत्त, भारतीय दर्शन और एशियाई संस्कृतियाँ, संस्कृत अध्ययन केंद्र, पुणे, 2019

10 मिश्रा, शशि भूषण, भारतीय ज्ञान परंपरा का वैश्विक प्रभाव, भारतीय विद्या भवन, दिल्ली, 2022